



DAWAT-E-ISLAMI

रिसाला नम्बर : 130

Bimar Aabid (Hindi)

बीमार आबिद

(मअ बीमारियों के 78 रुहानी इलाज)

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिसी र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ
الْعَالِيَةِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा
 मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़
 लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर
 अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले। (المستطرف ج 1 ص 40 دار الفكر بيروت)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना
 व बकीअ
 व मरिफ़त



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

बीमार आबिद

येह रिसाला (बीमार आबिद)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत
 अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी
 دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त
 में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है।
 इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए
 मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की

मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बीमार अ़ाबिद

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (48 सफ़हात)
मुकम्मल पढ़ लीजिये । إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى बीमारी बरदाश्त
करने का जज़्बा दोबाला होगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा क़रीना है : “ऐ लोगो ! बेशक बरोजे
क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला
शख्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद
शरीफ़ पढ़े होंगे ।”

(الْفُرْقَانُ بِمَأْثُورِ الْخُطَابِ ج ٥ ص ٢٧٧ حَدِيث ٨١٧٥)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

बीमार अ़ाबिद

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ से मन्कूल
है : दो अ़ाबिद या'नी इबादत गुज़ार पचास साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की
इबादत करते रहे, पचासवें साल के आख़िर में उन में से एक अ़ाबिद
सख़्त बीमार हो गए, वोह बारगाहे रब्बे बारी عَزَّوَجَلَّ में आहो ज़ारी करते
हुए इस तरह मुलतजी हुए (या'नी इल्लिजा करने लगे) : “ऐ मेरे पाक
परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने इतने साल मुसल्लसल तेरा हुक्म माना, तेरी इबादत
बजा लाया फिर भी मुझे बीमारी में मुब्तला कर दिया गया, इस में क्या

عَزَّوَجَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **اَللّٰهُ** उस पर दस रहमते भेजता है। (स्ल)

हिक्मत है ? मेरे मौला **عَزَّوَجَلَّ** ! मैं तो आज्माइश में डाल दिया गया हूँ।”
اَللّٰهُ ने फ़िरिश्तों को हुक्म फ़रमाया : इन से कहो, “तुम ने हमारी ही इमदाद व एहसान और अता कर्दा तौफ़ीक़ से हमारी इबादत की सआदत पाई, बाकी रही बीमारी ! तो हम ने तुम को अबरार का रुत्बा देने के लिये बीमार किया है। तुम से पहले के लोग तो बीमारी व मुसीबतों के ख़्वाहिश मन्द हुवा करते थे और हम ने तुम्हें बिन मांगे अता फ़रमा दी।”

(عُيُونُ الْحِكَايَاتِ حِصَّةُ ٢ ص ٣١٢ بتصرف)

बीमारी बहुत बड़ी ने 'मत है

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْى फ़रमाते हैं : बीमारी भी एक बहुत बड़ी ने 'मत है, इस के मनाफ़ेअ बे शुमार हैं, अगर्चे आदमी को ब ज़ाहिर इस से तकलीफ़ पहुंचती है मगर हकीक़तन राहत व आराम का एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा हाथ आता है। येह ज़ाहिरी बीमारी जिस को आदमी बीमारी समझता है, हकीक़त में रूहानी बीमारियों का एक बड़ा ज़बर दस्त इलाज है। हकीकी बीमारी अमराजे रूहानिया (म-सलन, दुन्या की महब्बत, दौलत की हिर्स, बुख़्ल, दिल की सख़्ती वगैरा) हैं कि येह अलबत्ता बहुत ख़ौफ़ की चीज़ है और इसी को म-रजे मोहलिक (या'नी हलाक करने वाली बीमारी) समझना चाहिये। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 799)

येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है
 अस्ल बरबाद कुन अमराज़ गुनाहों के हैं भाई क्यूं इस को फ़रामोश किया जाता है

(वसाइले बख़्शाश (मुरम्मम), स. 432)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

फरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

बीमारी में मोमिन और मुनाफ़िक़ का फ़र्क़

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बीमारियों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया : मोमिन जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी साबिका गुनाहों से कफ़ारा हो जाती है और आयिन्दा के लिये नसीहत और मुनाफ़िक़ जब बीमार हुवा फिर अच्छा हुवा, उस की मिसाल ऊंट की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया तो न उसे येह मा'लूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला !

(ابوداؤد ج ۳ ص ۲۴۰ حدیث ۳۰۸۹ ملخصاً)

हृदीसे पाक की शर्ह : मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ इस हृदीसे पाक के तहत “मिरआत” जिल्द 2 सफ़हा 424 पर फ़रमाते हैं : क्यूं कि मोमिन बीमारी में अपने गुनाहों से तौबा करता है, वोह समझता है कि येह बीमारी मेरे किसी गुनाह की वजह से आई और शायद येह आख़िरी बीमारी हो जिस के बा'द मौत ही आए, इस लिये इसे शिफ़ा के साथ मग़िफ़रत भी नसीब होती है। (जब कि) मुनाफ़िक़ ग़ाफ़िल येही समझता है कि फुलां वजह से मैं बीमार हुवा था (म-सलन फुलां चीज़ खा ली थी, मौसिम की तब्दीली के सबब बीमारी आई है, आज कल इस बीमारी की हवा चली है वग़ैरा) और फुलां दवा से मुझे आराम मिला (वग़ैरा वग़ैरा) अस्बाब में ऐसा फंसा रहता है कि मुसब्बिबुल अस्बाब (या'नी सबब पैदा करने वाले रब عَزَّوَجَلَّ) पर नज़र ही नहीं जाती, न तौबा करता है न अपने गुनाहों में ग़ौर। (मिरआतुल मनाजीह)

मरज़ उसी ने दिया है दवा वोही देगा

करम से चाहेगा जब भी शिफ़ा वोही देगा

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (अ.न.)

ज़ख़्मी होते ही हंस पड़ीं (हिक़ायत)

हज़रते सय्यिदुना फ़तह मौसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي की अहलियए मोह-त-रमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا एक मर्तबा ज़ोर से गिरीं जिस से नाखुन मुबारक टूट गया, लेकिन दर्द से “हाए हू” करने के बजाए हंसने लगीं !! किसी ने पूछा : क्या ज़ख़्म में दर्द नहीं हो रहा ? फ़रमाया : “सब्र के बदले में हाथ आने वाले सवाब की ख़ुशी में मुझे चोट की तक्लीफ़ का ख़याल ही न आ सका ।” (الْمَجَالِسَةُ لِلدِّيْنَوْرِي ج ۳ ص ۱۳۴)

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा عَزَّوَجَلَّ की अ-ज़मत और मा'रिफ़त का येह हक़ है कि तुम अपनी तक्लीफ़ की शिकायत न करो और न अपनी मुसीबत का तज़्किरा करो ।¹ (बिला ज़रूरत बीमारी परेशानी का दूसरों पर इज़हार बे सब्री है अफ़सोस ! मा'मूली नज़्ला और जुकाम या दर्दे सर भी हो जाए तो बा'ज लोग ख़्वाह म ख़्वाह हर एक को कहते फिरते हैं)

टूटे गो सर पे कोहे बला सब्र कर, ऐ मुबल्लिग़ ! न तू डगमगा सब्र कर

लब पे हफ़े शिकायत न ला सब्र कर, हां येही सुन्नते शाहे अबरार है

(वसाइले बख़्शाश (मुरम्मम), स. 473)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

मुसीबत छुपाने की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बीमारी और परेशानी पर शिक्वा करने के बजाए सब्र की अ़दत बनानी चाहिये कि शिकायत करने से मुसीबत दूर नहीं हो जाती बल्कि बे सब्री करने से सब्र का अज़्र ज़ाएअ

لَمِنْهَاجِ الْقَاصِدِيْنَ وَمُفِيْدِ الصَّادِقِيْنَ لِابْنِ الْجَوْزِي ص ۱۰۵۶

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مُعْتَمِدَات)

हो जाता है। बिना ज़रूरत बीमारी व मुसीबत का इज़हार करना भी अच्छी बात नहीं। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे छुपाया और लोगों से उस की शिकायत न की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि उस की मग़िफ़रत फ़रमा दे।” (ص १ ج १ م २१४ حديث १२३)

दाढ़ में दर्द के सबब मैं सो न सका ! (हि़कायत)

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي नक्ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना अहूनफ़ बिन कैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक बार मेरी दाढ़ में शदीद दर्द हुवा जिस के सबब मैं सारी रात सो न सका। मैं ने दूसरे दिन अपने चचाजान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की खिदमत में शिकायत की, कि “मैं दाढ़ के दर्द की वजह से सारी रात सो न सका।” इस बात को मैं ने तीन बार दोहराया। इस पर उन्होंने ने फ़रमाया : तुम ने एक ही रात में होने वाले अपने दर्द की इतनी ज़ियादा शिकायत कर डाली ! हालां कि मेरी आंख को जाएअ हुए तीस बरस हो चुके हैं, (अगर्चे देखने वालों को मा'लूम हो मगर अपनी ज़बान से) मैं ने कभी किसी से इस की शिकायत नहीं की ! (ص १६६ ج १ م १६६) (احياء القلوب ج १ ص १६६)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हि़साब मग़िफ़रत हो। اٰمِيْنَ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बीमार के लिये तोहफ़ा

सरवरे अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : जब कोई बन्दा बीमार हो जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तरफ़ दो फ़िरिश्ते भेजता है कि जा कर देखो मेरा बन्दा क्या कहता है। बीमार

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अगर अल्लाह तआला की हम्दो सना करता (म-सलन لِلّهِ कहता) है तो फ़िरिशते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जा कर उस का कौल अर्ज करते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है। इशादि इलाही होता है : “अगर मैं ने इस बन्दे को इस बीमारी में मौत दे दी तो इसे जन्त में दाख़िल करूंगा और अगर सिद्दह़त अ़ता की तो इसे पहले से भी बेहतर गोशत और ख़ून दूंगा और इस के गुनाह को मुअ़फ़ कर दूंगा।” (موطأ امام مالك ج ٢ ص ٤٢٩ حديث ١٧٩٨)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

“फ़ज़्ले रब” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बीमारी के फ़ज़ाइल पर 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿1﴾ बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को बीमारी में मुब्तला फ़रमाता रहता है यहां तक कि उस का हर गुनाह मिटा देता है।

(الْمُسْتَدْرَك ج ١ ص ٦٦٩ حديث ١٣٢٦)

﴿2﴾ जब मोमिन बीमार होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे गुनाहों से ऐसा पाक कर देता है जैसे भट्टी लोहे के जंग को साफ़ कर देती है।

(الْتَرْغِيب وَالتَّرْهِيْب ج ٤ ص ١٤٦ حديث ٤٢)

﴿3﴾ जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी मुसलमान को जिस्मानी तकलीफ़ में मुब्तला करता है तो फ़िरिशते से फ़रमाता है : “जो नेक अमल येह तन्दुरुस्ती की हालत में किया करता था इस के लिये वोही लिखो।” फिर अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे शिफ़ा अ़ता फ़रमाता है तो उस के (गुनाह) धुल जाते हैं और वोह पाक हो जाता है और अगर उस की मौत आ जाए तो उस की मग़ि़रत फ़रमा दी जाती है और उस पर रहूम किया जाता है। (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٤ ص ٢٩٧ حديث ١٢٥٠٥)

﴿4﴾ मरीज़ के गुनाह इस तरह झड़ते हैं जैसे दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं।

(الْتَرْغِيب وَالتَّرْهِيْب ج ٤ ص ١٤٨ حديث ٥٦)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुरआन)

﴿5﴾ अल्लाह तआला फ़रमाता है : जब अपने बन्दे की आंखें ले लूं फिर वोह सब्र करे, तो आंखों के बदले उसे जन्नत दूंगा। (بخاری ج ۶ ص ۴۰۶ حدیث ۵۰۶۳)

बिगैर बीमार हुए वफ़ात

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़माने में एक शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने कहा : “येह कितना खुश नसीब है कि बीमार हुए बिगैर ही फ़ौत हो गया।” तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “तुम पर अफ़सोस है ! क्या तुम्हें नहीं मा'लूम कि अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे किसी बीमारी में मुब्तला फ़रमाता तो उस के गुनाह मिटा देता।”

(موطأ امام مالك ج ۲ ص ۴۳۰ حدیث ۱۸۰۱)

एक रात के बुख़ार का सवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बुख़ार में जिस्मानी तक्लीफ़ ज़रूर है मगर उख़वी फ़ाएदे बे शुमार हैं, लिहाज़ा घबरा कर शिक्वा व शिकायत करने के बजाए सब्र कर के अज़्र कमाना चाहिये। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : जो एक रात बुख़ार में मुब्तला हो और उस पर सब्र करे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से राज़ी रहे तो अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाए जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था।

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ۷ ص ۱۶۷ حدیث ۹۸۶۸)

बुख़ार महशर की आग से बचाएगा

हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक मरीज़ की इयादत फ़रमाई तो फ़रमाया : तुझे बिशारत हो कि अल्लाह तआला फ़रमाता है : बुख़ार मेरी आग है इस लिये मैं इसे अपने मोमिन बन्दे पर दुन्या में मुसल्लत करता हूं ताकि क़ियामत के दिन इस की आग का हिस्सा (या'नी बदला) हो जाए।

(ابن ماجه ج ۴ ص ۱۰۵ حدیث ۳۴۷۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबुयुसैफ़)

बुख़ार को बुरा न कहो

सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे साइब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले गए। फ़रमाया : तुम्हें क्या हो गया है जो कांप रही हो ? अर्ज़ की : “बुख़ार आ गया है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस में ब-र-कत न करे।” इस पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “बुख़ार को बुरा न कहो कि यह तो आदमी की ख़ताओं को इस तरह दूर करता है जैसे भट्टी लोहे के मैल को।” (मुसलम स 1392 अहदिथ 2070)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْكَرِيمِ इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : बीमारियां एक या दो उज़्व को होती हैं मगर बुख़ार सर से पाउं तक हर रग में असर करता है, लिहाज़ा यह सारे जिस्म की ख़ताओं और गुनाहों को मुआफ़ कराएगा। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 413)

येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर
येह मरज़ तेरे गुनाहों को मिटा जाता है
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

सरकार को दो मर्दों के बराबर बुख़ार आता था

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और जब मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को छुवा तो अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ! आप को तो बहुत तेज़ बुख़ार है ! फ़रमाया : हां ! मुझे तुम्हारे दो मर्दों के बराबर बुख़ार होता है। मैं ने अर्ज़ की : क्या येह इस लिये कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के लिये दुगना सवाब होता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

है ? इर्शाद फ़रमाया : हां !

(मुसलम स १३९० हदीथ २०७१)

हम ने कभी किसी का बुरा नहीं चाहा !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'जु लोग बीमारियों और परेशानियों पर बे सब्री का मुज़ा-हरा करते हुए येह कहते सुनाई देते हैं कि हम ने तो कभी किसी का बुरा नहीं चाहा, किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा फिर भी न जाने हम पर येह परेशानियां क्यूं ! ऐसों के लिये बयान कर्दा हदीसे पाक में काफ़ी व वाफ़ी दर्स मौजूद है, यकीनन हमारे मा'सूम आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी भी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा था, फिर भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दीगर मर्दों के मुक़ाबले में दुगना बुख़ार आता था तो मा'लूम हुवा कि "दूसरों का कुछ बिगाड़ना" ही बीमारियों और मुसीबतों का बाइस नहीं होता, नीजु बीमारियां और परेशानियां मुसल्मान को सवाब का ख़ज़ाना दिलातीं, गुनाहों को मुआफ़ करवातीं और सब्र करने वाले मुसल्मान को जन्नत का हक़दार बनाती हैं।

मरीजु और कलिमाए कुफ़्र

बा'जु अवक़ात नादान लोग बीमारी और मुसीबत से तंग आ कर अल्लाह तआला पर ए'तिराजु करते हुए कुफ़्रिय्यात बक देते हैं, यकीनन इस तरह उन की बीमारी या मुसीबत दूर तो होती नहीं उल्टा उन की अपनी आख़िरत दाव पर लग जाती है। मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताब, "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" सफ़ह 179 पर है : अगर किसी ने बीमारी, बे रोज़गारी, गुरबत या किसी मुसीबत की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर ए'तिराजु करते हुए कहा : "ऐ मेरे रब ! तू मुझ पर क्यूं जुल्म करता है ? हालां कि मैं ने तो कोई गुनाह किया ही नहीं।" तो वोह काफ़िर है।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** (طبرانی) उस पर सो रहमतें नाजिल फरमाता है।

ज़बां पर शिक्वाए रन्जो अलम लाया नहीं करते
नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सवाब के शौक में मांग कर बुख़ार लिया (हिकायत)

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का सवाब कमाने का ज़ब्बा सद करोड़ मरहबा ! कि सवाब कमाने के शौक में दुआ मांग कर बुख़ार हासिल कर लिया ! चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक मुसलमान ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम जिन बीमारियों में मुब्तला होते हैं हमारे लिये उन में क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : (येह बीमारियां गुनाहों के) कफ़ारे हैं। हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अगर्चे बीमारी कम ही हो ? फ़रमाया : “अगर्चे कांटा चुभे या कोई और तकलीफ़ पहुंचे।” तो हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने लिये येह दुआ की (या अल्लाह) : “मरते दम तक बुख़ार मुझ से जुदा न हो और येह बुख़ार मुझे हज़, उम्रह, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद और फ़र्ज नमाज़ बा जमाअत अदा करने से न रोके।” फिर उन के विसाल तक जिस ने भी उन्हें छुवा बुख़ार की तपिश महसूस की। (سُنَنُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٤ ص ٤٨ حَدِيث ١١١٨٢) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

أَوَّيْنِ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

यकीनन मुसलमान के लिये बीमारियों और परेशानियों में दोनों जहानों की भलाइयां हैं, बुख़ार हो या कोई सी बीमारी या मुसीबत उस से गुनाह मुआफ़ होते और जन्नत का सामान होता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (अल्हिज़्बा)

बुख़ार तेरे लिये है गुनह का कफ़ारा¹

करेगा सब तो जन्नत का होगा नज़्ज़ारा

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

राहे खुदा में सर दर्द पर सब की फ़ज़ीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में सर दर्द में मुब्तला हो फिर उस पर सब करे तो उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।”

(مُسْنَدُ الْبَرَّاجِ ص ٦ ٤١٣ ٤١٤ ٤١٥ ٤١٦ ٤١٧ ٤١٨ ٤١٩ ٤٢٠ ٤٢١ ٤٢٢ ٤٢٣ ٤٢٤ ٤٢٥ ٤٢٦ ٤٢٧ ٤٢٨ ٤٢٩ ٤٣٠ ٤٣١ ٤٣٢ ٤٣٣ ٤٣٤ ٤٣٥ ٤٣٦ ٤٣٧ ٤٣٨ ٤٣٩ ٤٤٠ ٤٤١ ٤٤٢ ٤٤٣ ٤٤٤ ٤٤٥ ٤٤٦ ٤٤٧ ٤٤٨ ٤٤٩ ٤٥٠ ٤٥١ ٤٥٢ ٤٥٣ ٤٥٤ ٤٥٥ ٤٥٦ ٤٥٧ ٤٥٨ ٤٥٩ ٤٦٠ ٤٦١ ٤٦٢ ٤٦٣ ٤٦٤ ٤٦٥ ٤٦٦ ٤٦٧ ٤٦٨ ٤٦٩ ٤٧٠ ٤٧١ ٤٧٢ ٤٧٣ ٤٧٤ ٤٧٥ ٤٧٦ ٤٧٧ ٤٧٨ ٤٧٩ ٤٨٠ ٤٨١ ٤٨٢ ٤٨٣ ٤٨٤ ٤٨٥ ٤٨٦ ٤٨٧ ٤٨٨ ٤٨٩ ٤٩٠ ٤٩١ ٤٩٢ ٤٩٣ ٤٩٤ ٤٩٥ ٤٩٦ ٤٩٧ ٤٩٨ ٤٩٩ ٥٠٠ ٥٠١ ٥٠٢ ٥٠٣ ٥٠٤ ٥٠٥ ٥٠٦ ٥٠٧ ٥٠٨ ٥٠٩ ٥١٠ ٥١١ ٥١٢ ٥١٣ ٥١٤ ٥١٥ ٥١٦ ٥١٧ ٥١٨ ٥١٩ ٥٢٠ ٥٢١ ٥٢٢ ٥٢٣ ٥٢٤ ٥٢٥ ٥٢٦ ٥٢٧ ٥٢٨ ٥٢٩ ٥٣٠ ٥٣١ ٥٣٢ ٥٣٣ ٥٣٤ ٥٣٥ ٥٣٦ ٥٣٧ ٥٣٨ ٥٣٩ ٥٤٠ ٥٤١ ٥٤٢ ٥٤٣ ٥٤٤ ٥٤٥ ٥٤٦ ٥٤٧ ٥٤٨ ٥٤٩ ٥٥٠ ٥٥١ ٥٥٢ ٥٥٣ ٥٥٤ ٥٥٥ ٥٥٦ ٥٥٧ ٥٥٨ ٥٥٩ ٥٦٠ ٥٦١ ٥٦٢ ٥٦٣ ٥٦٤ ٥٦٥ ٥٦٦ ٥٦٧ ٥٦٨ ٥٦٩ ٥٧٠ ٥٧١ ٥٧٢ ٥٧٣ ٥٧٤ ٥٧٥ ٥٧٦ ٥٧٧ ٥٧٨ ٥٧٩ ٥٨٠ ٥٨١ ٥٨٢ ٥٨٣ ٥٨٤ ٥٨٥ ٥٨٦ ٥٨٧ ٥٨٨ ٥٨٩ ٥٩٠ ٥٩١ ٥٩٢ ٥٩٣ ٥٩٤ ٥٩٥ ٥٩٦ ٥٩٧ ٥٩٨ ٥٩٩ ٦٠٠ ٦٠١ ٦٠٢ ٦٠٣ ٦٠٤ ٦٠٥ ٦٠٦ ٦٠٧ ٦٠٨ ٦٠٩ ٦١٠ ٦١١ ٦١٢ ٦١٣ ٦١٤ ٦١٥ ٦١٦ ٦١٧ ٦١٨ ٦١٩ ٦٢٠ ٦٢١ ٦٢٢ ٦٢٣ ٦٢٤ ٦٢٥ ٦٢٦ ٦٢٧ ٦٢٨ ٦٢٩ ٦٣٠ ٦٣١ ٦٣٢ ٦٣٣ ٦٣٤ ٦٣٥ ٦٣٦ ٦٣٧ ٦٣٨ ٦٣٩ ٦٤٠ ٦٤١ ٦٤٢ ٦٤٣ ٦٤٤ ٦٤٥ ٦٤٦ ٦٤٧ ٦٤٨ ٦٤٩ ٦٥٠ ٦٥١ ٦٥٢ ٦٥٣ ٦٥٤ ٦٥٥ ٦٥٦ ٦٥٧ ٦٥٨ ٦٥٩ ٦٦٠ ٦٦١ ٦٦٢ ٦٦٣ ٦٦٤ ٦٦٥ ٦٦٦ ٦٦٧ ٦٦٨ ٦٦٩ ٦٧٠ ٦٧١ ٦٧٢ ٦٧٣ ٦٧٤ ٦٧٥ ٦٧٦ ٦٧٧ ٦٧٨ ٦٧٩ ٦٨٠ ٦٨١ ٦٨٢ ٦٨٣ ٦٨٤ ٦٨٥ ٦٨٦ ٦٨٧ ٦٨٨ ٦٨٩ ٦٩٠ ٦٩١ ٦٩٢ ٦٩٣ ٦٩٤ ٦٩٥ ٦٩٦ ٦٩٧ ٦٩٨ ٦٩٩ ٧٠٠ ٧٠١ ٧٠٢ ٧٠٣ ٧٠٤ ٧٠٥ ٧٠٦ ٧٠٧ ٧٠٨ ٧٠٩ ٧١٠ ٧١١ ٧١٢ ٧١٣ ٧١٤ ٧١٥ ٧١٦ ٧١٧ ٧١٨ ٧١٩ ٧٢٠ ٧٢١ ٧٢٢ ٧٢٣ ٧٢٤ ٧٢٥ ٧٢٦ ٧٢٧ ٧٢٨ ٧٢٩ ٧٣٠ ٧٣١ ٧٣٢ ٧٣٣ ٧٣٤ ٧٣٥ ٧٣٦ ٧٣٧ ٧٣٨ ٧٣٩ ٧٤٠ ٧٤١ ٧٤٢ ٧٤٣ ٧٤٤ ٧٤٥ ٧٤٦ ٧٤٧ ٧٤٨ ٧٤٩ ٧٥٠ ٧٥١ ٧٥٢ ٧٥٣ ٧٥٤ ٧٥٥ ٧٥٦ ٧٥٧ ٧٥٨ ٧٥٩ ٧٦٠ ٧٦١ ٧٦٢ ٧٦٣ ٧٦٤ ٧٦٥ ٧٦٦ ٧٦٧ ٧٦٨ ٧٦٩ ٧٧٠ ٧٧١ ٧٧٢ ٧٧٣ ٧٧٤ ٧٧٥ ٧٧٦ ٧٧٧ ٧٧٨ ٧٧٩ ٧٨٠ ٧٨١ ٧٨٢ ٧٨٣ ٧٨٤ ٧٨٥ ٧٨٦ ٧٨٧ ٧٨٨ ٧٨٩ ٧٩٠ ٧٩١ ٧٩٢ ٧٩٣ ٧٩٤ ٧٩٥ ٧٩٦ ٧٩٧ ٧٩٨ ٧٩٩ ٨٠٠ ٨٠١ ٨٠٢ ٨٠٣ ٨٠٤ ٨٠٥ ٨٠٦ ٨٠٧ ٨٠٨ ٨٠٩ ٨١٠ ٨١١ ٨١٢ ٨١٣ ٨١٤ ٨١٥ ٨١٦ ٨١٧ ٨١٨ ٨١٩ ٨٢٠ ٨٢١ ٨٢٢ ٨٢٣ ٨٢٤ ٨٢٥ ٨٢٦ ٨٢٧ ٨٢٨ ٨٢٩ ٨٣٠ ٨٣١ ٨٣٢ ٨٣٣ ٨٣٤ ٨٣٥ ٨٣٦ ٨٣٧ ٨٣٨ ٨٣٩ ٨٤٠ ٨٤١ ٨٤٢ ٨٤٣ ٨٤٤ ٨٤٥ ٨٤٦ ٨٤٧ ٨٤٨ ٨٤٩ ٨٥٠ ٨٥١ ٨٥٢ ٨٥٣ ٨٥٤ ٨٥٥ ٨٥٦ ٨٥٧ ٨٥٨ ٨٥٩ ٨٦٠ ٨٦١ ٨٦٢ ٨٦٣ ٨٦٤ ٨٦٥ ٨٦٦ ٨٦٧ ٨٦٨ ٨٦٩ ٨٧٠ ٨٧١ ٨٧٢ ٨٧٣ ٨٧٤ ٨٧٥ ٨٧٦ ٨٧٧ ٨٧٨ ٨٧٩ ٨٨٠ ٨٨١ ٨٨٢ ٨٨٣ ٨٨٤ ٨٨٥ ٨٨٦ ٨٨٧ ٨٨٨ ٨٨٩ ٨٩٠ ٨٩١ ٨٩٢ ٨٩٣ ٨٩٤ ٨٩٥ ٨٩٦ ٨٩٧ ٨٩٨ ٨٩٩ ٩०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

त-ल-बए इल्मे दीन और म-दनी क़ाफ़िलों के
मुसाफ़िरीन के लिये खुश ख़बरी

राहे खुदा में निकलने वालों की भी क्या शान है! इस हदीसे पाक के तहत मुजाहिदीन के इलावा त-ल-बए इल्मे दीन, हज़ व उम्रह के लिये घर से निकलने वाले और सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में हुसूले इल्मे दीन की गरज़ से सफ़र करने वाले अशिक़ाने रसूल भी शामिल हैं चूँकि येह सब राहे खुदा में होते हैं लिहाज़ा इन में से भी किसी को सर का दर्द हुवा तो اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ उस के पिछले गुनाह (सगीरा) मुआफ़ कर दिये जाएंगे।

सर दर्द के शुक्राने में 400 रक्अत नफ़्ल (हिकायत)

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना फ़त्ह मौसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي को दर्दे सर हुवा तो खुश हो कर इर्शाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वोह मरज़ इनायत फ़रमाया जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को

1 : “गुनाह का कफ़ारा” या’नी गुनाह की मुआफ़ी का ज़रीआ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (म)।

दरपेश होता था लिहाज़ा अब इस का शुक्राना येह है कि मैं 400 रकअत नफ़ल पढ़ूं । (152 रहमत भरी हिकायात, स. 171)

बुख़ार और दर्दे सर मुबारक अमराज़ हैं

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत" सफ़हा 118 पर है : (आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :) दर्दे सर और बुख़ार वोह मुबारक अमराज़ हैं जो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَالسَّلَام को होते थे, एक वलिय्युल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दर्दे सर हुवा, आप ने इस शुक्रिये में तमाम रात नवाफ़िल में गुज़ार दी कि रब्बुल इज़्ज़त तबा-र-क व तअला ने मुझे वोह मरज़ दिया जो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَالسَّلَام को होता था । अल्लाहु अक्बर ! यहां (अवाम की) येह हालत कि अगर बराए नाम दर्द मा'लूम हुवा तो येह ख़याल होता है कि जल्द नमाज़ पढ़ लें । फिर फ़रमाया : हर एक मरज़ या तकलीफ़ जिस्म के जिस मौज़ेअ (या'नी जगह) पर होती है वोह ज़ियादा कफ़ारा उसी मौक़अ (या'नी मक़ाम) का है कि जिस का तअल्लुक़ ख़ास इस से है लेकिन बुख़ार वोह मरज़ है कि तमाम जिस्म में सरायत कर जाता है जिस से बि इज़्ज़िही तअला (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से) (बुख़ार) तमाम रग रग के गुनाह निकाल लेता है । (मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 118)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

जन्नती ख़ातून (हिकायात)

हज़रते सय्यिदुना अता बिन अबू रबाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने मुझ से फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें एक जन्नती औरत न दिखाऊं ? मैं ने अर्ज़ की : ज़रूर दिखाइये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (क़ुब्रिल)

फ़रमाया : येह हबशी औरत, इस ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ की खिदमते बा ब-र-कत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मुझे मिर्गी¹ का मरज़ है जिस की वज्ह से मैं गिर जाती हूं और मेरा पर्दा खुल जाता है लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये दुआ कीजिये। फ़रमाया : “अगर तुम चाहो तो सब करो और तुम्हारे लिये जन्नत है और अगर चाहो तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ करूं कि वोह तुम्हें अफ़ियत इनायत फ़रमा दे।” अर्ज़ की : मैं सब करूंगी। फिर अर्ज़ की : (जब मिर्गी का दौरा पड़ता है) मेरा पर्दा खुल जाता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ कीजिये कि मेरा पर्दा न खुला करे। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस के लिये दुआ फ़रमाई। (بخاری ج ٤ ص ٦٠٦٠٢ حدیث ٦٠٦٠٢)

दवा भी सुन्नत है और दुआ भी

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ मिरआत जिल्द 2 सफ़हा 427 पर फ़रमाते हैं : उस मुबारक औरत का नाम सुऐरा या सुक़ैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا है बीबी ख़दीजा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की कंधी चोटी की खिदमत अन्जाम देती थीं (لمعات ومرقات) (मिर्गी में गिर जाती हूं और मेरा पर्दा खुल जाता है) के ज़िम्न में मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : या'नी गिर कर मुझे तन बदन का होश नहीं रहता, दुपट्टा वग़ैरा उतर जाता है, ख़ौफ़ करती हूं कि कभी बेहोशी में सित्र न खुल जाए। आगे चल कर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ से उस सहाबिया को “शिफ़ा या सब्र” का इख़्तियार देने के तअल्लुक़ से मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : इस में इशा-रतन मा'लूम हुवा कि कभी बीमारी की दवा और मसाइब में दुआ न करना सवाब और सब्र में

1 : एक बीमारी जिस से आ'जा में झटके लगते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **اللّٰهُمَّ** तुम पर रहमत भेजेगा । (अबु सय्यद)

शामिल है इस का नाम खुदकुशी नहीं, खुसूसन जब पता लग जाए कि यह मुसीबत रब की तरफ़ से इम्तिहान है इसी लिये (हज़रते सय्यिदुना) इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने नमरूद की आग में जाते वक़्त और हज़रते (सय्यिदुना) इमाम हुसैन (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने मैदाने करबला में दफ़ड़य्या (या'नी आज़्माइश दूर होने) की दुआ न की, वरना आ़म हालात में दवा भी सुन्नत है और दुआ भी ।

(मिरआतुल मनाजीह)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

मिर्गी का रूहानी इलाज

सू-रतुशशम्स को पढ़ कर मिर्गी वाले के कान में फूंक मारना बहुत मुफ़ीद है ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 602)

नस चढ़ जाने की फ़ज़ीलत

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते सुना : जब मोमिन की नस चढ़ जाती है तो **اللّٰهُمَّ** उस का एक गुनाह मिटा देता है, उस के लिये एक नेकी लिखता है और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है ।

(مُعْجَم أَوْسَط ج ٢ ص ٤٨ حديث ٢٤٦٠)

पेट की बीमारी में मरने की फ़ज़ीलत

सरकारे अ़ली व़कार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने राहत निशान है : **يَا نَبِيَّ مَنْ قَتَلَهُ بَطْنُهُ لَمْ يُعَذَّبْ فِي قَبْرِهِ** - या'नी जिसे उस के पेट (की बीमारी) ने मारा उसे अज़ाबे क़ब्र न होगा ।

(ترمذی ج ٢ ص ٣٣٤ حديث ١٠٦٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (बायुम्)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْكُتَّان इस की शर्ह में फ़रमाते हैं : या'नी पेट की बीमारी से मरने वाला अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ है क्यूं कि उसे दुन्या में इस मरज़ की वजह से बहुत तकलीफ़ पहुंच चुकी, येह तकलीफ़े क़ब्र का दफ़्ज़य्या (या'नी दूर करने वाली) बन गई। (मिरआत, जि. 2, स. 425)

“या हुसैन” के छ हुरूफ़ की निरुबत से 6 तरह की बीमारियों में मरने वाले शहीदों की निशान देही बा 'ज अमराज़ में मरने वाला शहीद है

﴿1﴾ “पेट की बीमारी में मरने वाला।” (इस के हाशिये में सदरुशशरीअह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : इस से मुराद इस्तिस्का (या'नी ऐसी बीमारी जिस में पेट बढ़ जाता है और प्यास बहुत लगती है) या “दस्त (MOTION) आना” दोनों कौल हैं और येह लफ़्ज़ दोनों को शामिल हो सकता है लिहाज़ा उस के फ़ज़ल से उम्मीद है कि दोनों को शहादत का अज़्र मिले) ﴿2﴾ ज़ातुल जम्ब (या'नी पहलू या पस्ली के दर्द) में मरने वाला ﴿3﴾ सिल (कि इस में फेफड़ों में ज़ख़्म हो जाते और मुंह से खून आने लगता है इस) में मरने वाला ﴿4﴾ बुख़ार में मरने वाला ﴿5﴾ मिर्गी में मरने वाला ﴿6﴾ जो मरज़ में 40 बार कहे और उसी मरज़ में मर जाए (वोह शहीद है) और अच्छा हो गया तो उस की मग़िफ़रत हो जाएगी। (तफ़्सील के लिये देखिये : बहारे शरीअत, जि. 1, स. 857 ता 863 मक-त-बतुल मदीना)

मरीज़ की इयादत का सवाब

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उहद पहाड़ जितना है। (मिज़ाज़)

कि हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इर्शाद फ़रमाया : मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ने **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ से अर्ज़ की : मरीज़ की इयादत करने वाले को क्या अन्न मिलेगा ? तो **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَजَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : “उस के लिये दो फ़िरिश्ते मुक़रर किये जाएंगे जो क़ब्र में हर रोज़ उस की इयादत करेंगे हत्ता कि क़ियामत आ जाए।”

(أَلْفُرْدُوسُ بِمَأْثُورِ الْخُطَابِ ج ۳ ص ۱۹۳ حَدِيث ۴۵۳۶)

बीमार को दुआ के लिये कहो

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अ-ज़मत निशान है : जब तुम किसी बीमार के पास जाओ तो उसे अपने लिये दुआ के लिये कहो कि उस की दुआ फ़िरिश्तों की दुआ की तरह है।

(ابن ماجه ج ۲ ص ۱۹۱ حَدِيث ۱۴۴۱)

इयादत करते वक़्त की एक सुन्नत

हुजूर ताजदारे रिसालत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** एक आ'राबी की इयादत को तशरीफ़ ले गए और आदते करीमा येह थी कि जब किसी मरीज़ की इयादत को तशरीफ़ ले जाते तो येह फ़रमाते :

لَا بَأْسَ طَهُورًا شَاءَ اللهُ- (या'नी : कोई हरज की बात नहीं अल्लाह तआला

ने चाहा तो येह मरज़ (गुनाहों से) पाक करने वाला है।) उस आ'राबी से भी

येही फ़रमाया : **لَا بَأْسَ طَهُورًا شَاءَ اللهُ-** (بخاری ج ۲ ص ۵۰۵ حَدِيث ۳۶۱۶)

इयादत में सात बार पढ़ने की दुआ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : जिस ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त करीब न

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

आया हो और सात मर्तबा यह अल्फ़ाज़ कहे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज़ से शिफ़ा अता फ़रमाएगा : **أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ** या'नी मैं अ-जमत वाले, अर्शे अजीम के मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूँ। (ابوداؤد ج ۳ ص ۲۵۱ حدیث ۳۱۰۶)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

“चल मदीना” के सात हुरूफ़ की निस्बत से
इयादत के 7 म-दनी फूल

❁ मरीज़ की इयादत करना सुन्नत है ❁ अगर मा'लूम है कि इयादत को जाएगा तो उस बीमार पर गिरां (या'नी ना गवार) गुज़रेगा ऐसी हालत में इयादत न करे ❁ इयादत को जाए और मरज़ की सख़्ती देखे तो मरीज़ के सामने यह ज़ाहिर न करे कि तुम्हारी हालत ख़राब है और न सर हिलाए जिस से हालत का ख़राब होना समझा जाता है ❁ उस के सामने ऐसी बातें करनी चाहिएं जो उस के दिल को भली मा'लूम हों ❁ उस की मिज़ाज पुर्सी करे ❁ उस के सर पर हाथ न रखे मगर जब कि वोह खुद इस की ख़्वाहिश करे ❁ फ़ासिक़ की इयादत भी जाइज़ है क्यूं कि इयादत हुकूके इस्लाम से है और फ़ासिक़ भी मुस्लिम है।

(बहारे शरीअत, जि. 3, हिस्सा : 16, स. 505 मुलख़ब्रसन)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

बीमारी और झूट

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सद करोड़ अफ़सोस ! बड़ा नाजुक दौर है, “झूट” बोलने जैसे हराम और जहन्म में ले जाने वाले काम से बचने का ज़ेहन बहुत कम रह गया है, न ख़ौफ़े खुदा है न शर्म मुस्तफ़ा, न अज़ाबे क़ब्र का धड़का है न दोज़ख़ का खटका ! हर तरफ़ गोया !

فَرَمَانِے مُسْتَفَا عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جِس نے مُزْجِ پَرِ اِکْ بَارِ دُرُودِ پَاکِ پढ़َا **ALLAH** عَزَّ وَجَلَّ
 उस पर दस रहमतेँ भेजता है। (स्)

झूट ! झूट ! और बस झूट का राज है ! यकीन मानिये ! बीमार हो या तीमार दार, मरीज़ हो या मिज़ाज पुर्सी करने वाला रिश्तेदार, दोस्त दार या महल्ले दार जिसे देखो ! बे धड़क झूट बोलता दिखाई दे रहा है। चूँकि येह रिसाला बीमारी के मु-तअल्लिक है लिहाज़ा उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के लिये “बीमारी” के चन्द जुदा जुदा उन्वानात के तहूत बोले जाने वाले झूट की कुछ मिसालें पेश की जाती हैं :

मा 'मूली बीमारी को सख़्त बीमारी कहने के मु-तअल्लिक झूट की 6 मिसालें

जिस किस्म के मुबा-लगे का आदतन रवाज है लोग उसे मुबा-लगे ही पर महमूल (या'नी गुमान) करते हैं इस के हकीकी मा'ना मुराद नहीं लेते वोह झूट में दाख़िल नहीं, म-सलन येह कहा कि तुम्हारे पास हज़ार मर्तबा आया या हज़ार मर्तबा मैं ने तुम से येह कहा। यहां हज़ार का अ़दद मुराद नहीं बल्कि कई मर्तबा आना और कहना मुराद है, येह लफ़्ज़ ऐसे मौक़अ पर नहीं बोला जाएगा कि एक ही मर्तबा आया हो या एक ही मर्तबा कहा हो और अगर एक मर्तबा आया और येह कह दिया कि हज़ार मर्तबा आया तो झूटा है। (رَدُّ الْمَحْتَارِ ج ٩ ص ٧٠٥) ﴿1﴾ **बा'ज़** अवक़ात बीमारी का तज़्किरा करने में ऐसा मुबा-लगा किया जाता है कि उर्फ़ व रवाज में लोग उस हृद की बीमारी को बयान करने के लिये मुबा-लगे के ऐसे अल्फ़ाज़ इस्ति'माल नहीं करते, म-सलन : किसी को मा'मूली सी बीमारी हो उस के बारे में कहना : “उस की तबीअत बहुत सख़्त नासाज़ है” येह झूट है ﴿2﴾ इज्तिमाअ वग़ैरा में हकीक़त में तो किसी और वज्ह

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جَو شَخْصٍ مُؤْمِنٍ عَلَى دُرُودِ طَاكٍ يَدْنَاهُ يَهْلِكُ بِهَا جَنَّةً كَمَا يَهْلِكُ بِهَا رَأْسُهُ (طبرانی)

से शिर्कत न की और इत्तिफ़ाक़ से कोई मा'मूली सी बीमारी भी थी मगर ग़ैर हाज़िरी का सबब बीमारी न होने के बा वुजूद कहना : “मैं सख़्त बीमार था इस लिये न आ सका ।” इस जुम्ले में गुनाह भरे दो झूट हैं ! (الف) मा'मूली सी बीमारी को “सख़्त बीमारी” कहा (ب) बीमारी को ग़ैर हाज़िरी का सबब क़रार दिया हालां कि सबब कुछ और था ﴿3﴾ इसी तरह मा'मूली बुख़ार हो और कहना : “मुझे इतना तेज़ बुख़ार था कि सारी रात सो नहीं सका” ﴿4﴾ काम के लिये बोलें तो मा'मूली थकावट होने के बा वुजूद जान छुड़ाने के लिये कहना : “मैं बहुत थका हुआ हूँ किसी और से काम का कह दें” हां सिर्फ़ इतना कहा : “थका हुआ हूँ” तो झूट नहीं । या ﴿5﴾ मा'मूली सा दर्द हो तब भी बोलना : मेरी टांगों में शदीद दर्द है ﴿6﴾ यूंही कोर्ट कचहरी में पेशी वग़ैरा से बचने के लिये मा'मूली बीमारी को बड़ा बना कर पेश करना म-सलन कहना : इन के दिल की शिरयान (VEIN) बन्द है, दिल का दौरा पड़ सकता है वग़ैरा ।

दुखों के बा वुजूद नेकियों भरे जवाबात की मिसालें

मिज़ाज पुर्सी करने में अक्सर रस्मी सुवालात की तक्रार होती है म-सलन : क्या हाल है ? ख़ैरियत है ? आफ़ियत है ? कैसे हैं आप ? सिह्हत कैसी है ? और सुनाओ तबीअत अच्छी है ? ठीकठाक हैं ना ? कोई परेशानी तो नहीं ? वग़ैरा वग़ैरा । तजरिबा येही है कि उमूमन साइल (या'नी पूछने वाला) सिर्फ़ बोलने की खातिर बोल रहा होता है, हकीकत में मुख़ातब (या'नी जिस की मिज़ाज पुर्सी कर रहा है उस) की तबीअत से उसे कोई दिल चस्पी नहीं होती । अब अगर मस्कुल या'नी जिस से

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद पाक न पड़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (अबुन)

सुवाल किया गया वोह शख्स बीमार, टेन्शन का शिकार, कर्जदार और मुश्किलात से दो चार हो और अपने अमराज और दुखों की फाइल खोल दे और परेशानियों की फेहरिस बयान करना शुरू कर दे तो खुद साइल या'नी मिजाज पुर्सी करने वाला इम्तिहान में पड़ जाए ! लिहाजा जिस से तबीअत पूछी गई वोह चाहे तो **ब निय्यते शुक्रे इलाही मुख़लिफ़ ने'मतों** म-सलन : ईमान की दौलत मिलने, दामने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हाथ में होने का तसव्वुर बांध कर इस तरह के जवाबात दे कर सवाब कमा सकता है : **﴿1﴾** الْحَمْدُ لِلَّهِ **﴿2﴾** الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ (या'नी हर हाल में अल्लाह शुक्र है) **﴿3﴾** मालिक का बहुत करम है **﴿4﴾** अल्लाह तआला की रहमत है वगैरा । इसी तरह अल्लाह तआला की अता कर्दा दीगर ने'मतों के मुकाबले में अपनी तक्लीफों को कमतर तसव्वुर करते हुए भी शुक्रे इलाही की निय्यत से या रहमते इलाही की उम्मीद पर बयान कर्दा चार जवाबात में से कोई सा जवाब दे सकता है । याद रहे ! अगर बीमारी पर तवज्जोह है लेकिन इस के बा वुजूद बिगैर शर-ई रुख़सत के حال **﴿1﴾** الْحَمْدُ لِلَّهِ, **﴿2﴾** الْحَمْدُ لِلَّهِ, मालिक का करम है या इसी तरह का कोई जुम्ला कहना जिस से बीमार होने के बा वुजूद उसी मरज़ के मु-तअल्लिक़ सिहहत बेहतर बताना मक़सूद हो जिस के बारे में पूछा जा रहा है तो येह गुनाह भरा झूट है ।

मिजाज पुर्सी के जवाब में झूट बोलने की 9 मिसालें

जब किसी से पूछा जाता है : आप की तबीअत कैसी है ? तो तबीअत नासाज होने के बा वुजूद बसा अवकात इस तरह के जवाबात

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **ALLAH** (س) उस पर दस रहमतें भेजता है।

मिलते हैं : **1** ठीक हूं **2** बहुत ठीक हूं **3** बिल्कुल ठीक हूं **4** तबीअत फ़र्स्ट क्लास है **5** एवन तबीअत है **6** किसी किसम की तकलीफ़ नहीं **7** मजे में हूं **8** ज़रा बराबर भी कोई मस्अला नहीं है **9** एक दम फ़िट हूं।

मरीज़ की तरफ़ से दिये जाने वाले मज़कूरा 9 जवाबात गुनाह भरे झूट हैं। अलबत्ता मरीज़ की जवाब देने में कोई सहीह तावील (या'नी बचाव की सच्ची दलील) या दुरुस्त निय्यत हो तो गुनाह से बचत मुम्किन है मगर उमूमन बिगैर किसी निय्यत के ही मज़कूरा और इस से मिलते जुलते झूटे जवाबात दे दिये जाते हैं। अगर बीमारी ज़ेहन में न हो, जैसे अरिज़ी या'नी वक्ती तौर पर हो जाने वाले आराम पर बसा अवकात इन्सान अपनी बीमारी भूल जाता है, तो ऐसी हालत में "ठीक हूं" वगैरा कह दिया तो गुनाह नहीं नीज़ मा'मूली मरज़ में बीमारी को ना काबिले ज़िक्र समझते हुए या अक्सर मरज़ ठीक हो जाने और मा'मूली सा रह जाने की सूरत में भी "ठीक हूं" कहने में हरज नहीं अलबत्ता ऐसे मौक़अ पर बिल्कुल ठीक हूं, फ़र्स्ट क्लास तबीअत है, एवन हूं, ज़रा बराबर भी कोई मस्अला नहीं है और इसी मा'ना के दीगर अल्फ़ाज़ कहना गुनाह भरा झूट शुमार होंगे।

كَلِّ حَالِ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ

किसी ने तबीअत पूछी और मरीज़ के मुंह से बिगैर किसी निय्यत के बे इख़्तियार निकला : "الْحَمْدُ لِلَّهِ" तो इस में हरज नहीं। या बीमारी की तरफ़ तवज्जोह होने के बा वुजूद "ठीक हूं" के मा'ना में नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

बल्कि हर हाल में शुक्रे इलाही बजा लाने की निय्यत से कहा :
 “الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ” (या'नी हर हाल में अल्लाह का शुक्र है) तो इस
 सूरत में भी झूट नहीं।

मरीज़ को तसल्ली देने के लिये बोले जाने वाले झूट की 13 मिसालें

(जो बात सच का उलट है वोह झूट है)

जैल में जो जुम्ले दिये जा रहे हैं येह झूट भी हो सकते हैं और नहीं भी, यूंही इन के बोलने में रुख़सत की सूरत भी हो सकती है और नहीं भी, लिहाज़ा अगर कोई दूसरा शख्स येह जुम्ले बोले तो हम उस के बारे में गुनाहगार होने की बद गुमानी न करें अलबत्ता अपनी हृद तक इस तरह के जुम्ले बोलते वक़्त बात की सदाक़त और अपनी निय्यत का ख़याल रखें। समझाने के लिये एक मिसाल अर्ज़ है कि जैसे एक आदमी ने हमारे सामने मुरग़न (या'नी तेल घी वाला) खाना खाया और किसी दूसरे शख्स से कहा कि मैं परहेज़ कर रहा हूं तो ज़रूरी नहीं येह कहना झूट हो क्यूं कि हो सकता है कि डॉक्टर ने महीने में एक मर्तबा इस तरह खाने की इजाज़त दी हो या येह जुम्ला कहते वक़्त काइल की (या'नी कहने वाले की) तवज्जोह अपने खाने की तरफ़ न रही हो। इसी तरह बक़िय्या जुम्लों में भी बहुत से एहतिमालात व क़ियासात हो सकते हैं।

﴿1﴾ आप तो مَا شَاءَ اللهُ बहुत सब्र (या हिम्मत) वाले हैं ﴿2﴾ आप ने तो बड़े बड़े दुख उठाए हैं मगर कभी “उफ़” तक नहीं किया ﴿3﴾ आप ने तो हमेशा सब्र ही किया है ﴿4﴾ वाह ! भई वाह ! आप के चेहरे पर तो

فَرَمَانِے مُسْتَفَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (अहमद)

“पानी” आ गया है ﴿5﴾ مَا شَاءَ اللّٰهُ अब तो आप बिल्कुल ठीक हो चुके हैं ! ﴿6﴾ आप तो बीमार लग ही नहीं रहे ! ﴿7﴾ आप की बीमारी भाग गई है ! ﴿8﴾ नहीं ! नहीं ! आप को तो कुछ भी नहीं हुवा है ﴿9﴾ मुबारक हो ! आप की सारी रिपोर्टें क्लीयर आई हैं ﴿10﴾ तश्वीश नाक मरज़ पर मुत्तलअ होने के बा वुजूद कहना : “घबराने की कोई बात नहीं, डोक्टर तो ख़्वाह म ख़्वाह ही डरा देते हैं” ﴿11﴾ फुलां को भी येह मरज़ हुवा था दो दिन में ठीक हो गया था तुम भी जल्दी ठीक हो जाओगे (जिस मरीज़ का हवाला दे रहे होते हैं उस का हकीकत की दुन्या में कोई वुजूद नहीं होता) ﴿12﴾ बुख़ार में तपते मरीज़ की नब्ज़ पर हाथ रख कर जान बूझ कर कहना : “नहीं भाई ! नहीं ! तुम्हें कोई बुख़ार वुख़ार नहीं है” ﴿13﴾ दिल की ताईद न होने के बा वुजूद महज़ तसल्ली देने के लिये सख़्त बीमार से कहना : “भाई ! तुम तो छोटी सी बीमारी में दिल हार बैठे !”

मरीज़ के झूट बोलने की 13 मिसालें

(जो बात सच का उलट है वोह झूट है)

﴿1﴾ केन्सर वगैरा के अन्देशे के मौकअ पर कहना : “मुझे अपनी बीमारी की कोई परवा नहीं, बस छोटे छोटे बच्चों फ़िक्र है” ﴿2﴾ मेरे पास बिल्कुल गुन्जाइश नहीं, मैं इलाज का खर्च बरदाश्त कर ही नहीं सकता (हालां कि अच्छी ख़ासी रक़म जम्अ कर के रखी होती है) ﴿3﴾ गुन्जाइश होने के बा वुजूद लोगों की हमदर्दियां लेने के लिये कहना : मेरे पास खाने को पैसे नहीं हैं इलाज के लिये कहां से लाऊं ! ﴿4﴾ मैं फुल परहेज़ी कर रहा हूं (हालां कि कहीं दा'वत हो तो “जनाब” सब से पहले जा पहुंचते हैं) ﴿5﴾ डोक्टर साहिब ! बिल्कुल टाइम टू टाइम दवा पी रहा हूं (हालां कि

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (مُعْتَبَرَات)

ख़ूब नागे कर रहे होते हैं) ﴿6﴾ शूगर के मरीज़ का कहना : मैं मिठाई तो चखता तक नहीं (जब कि बेचारे मिठाई खाने से बाज़ नहीं रह पा रहे होते) ﴿7﴾ किसी भारी भरकम शख्स को वज़न कम करने का हमदर्दानी मशवरा मिलने पर जवाब : मैं खाने पीने में काफ़ी एहतियात कर रहा हूँ (हालां कि कढ़ाई गोश्त हो या फ़ाय गोश्त, शरबत हो या ठन्डी बोतल, क़ोरमा हो या बिरयानी, कबाब हो या समोसा जो भी इन के सामने आता है बच कर नहीं जाता!) ﴿8﴾ मरज़ की तरफ़ तवज्जोह होने के बा वुजूद कहना : भला चंगा हूँ ﴿9﴾ मैं बीमार थोड़ी हूँ ﴿10﴾ गिले शिक्वे का अम्बार लगाने के बा'द कहना : "मैं ने सब्र का दामन हाथ से नहीं छोड़ा" (येह गुनाह भरा झूट उसी सूरत होगा जब कि बोलते वक़्त सब्र की ता'रीफ़ की तरफ़ तवज्जोह हो) ﴿11﴾ तकलीफ़ की शिद्दत के बा वुजूद कहना : "नहीं! नहीं! मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हो रही!" ﴿12﴾ मुझे बीमारी का ग़म नहीं अपने वक़्त के ज़ाएअ होने का अफ़सोस हो रहा है ﴿13﴾ ख़ैराती शिफ़ाख़ाने में मुफ़्त इलाज करवाने के बा वुजूद कहना : "इलाज के सारे अख़राजात मैं ने खुद बरदाश्त किये हैं किसी ने झूटे मुंह भी तआवुन की पेशकश नहीं की।"

बीमारियों के 78 रूहानी इलाज

(बयान कर्दा तिब्बी और देसी इलाज अपने तबीब के मशवरे से कीजिये)

बुख़ार के चार रूहानी इलाज

﴿1﴾ बुख़ार वाला ब कसरत بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ पढ़ता रहे।

﴿2﴾ गरमी का बुख़ार हो तो يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ 47 बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर गले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

में डाल दीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** बुख़ार जाता रहेगा।

﴿3﴾ **يَا عَفْوُرُ** कागज़ पर तीन बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर गले में डाल या बाजू पर बांध दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** हर किस्म के बुख़ार से नजात मिलेगी।

﴿4﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ** 30 बार कागज़ पर लिख कर पानी की बोतल में डाल कर मरीज़ को दिन में तीन बार थोड़ा थोड़ा पानी पिलाइये **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** बुख़ार उतर जाएगा, ज़रूरतन मज़ीद पानी शामिल करते रहिये। (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿5﴾ ऐसे बुख़ार का रूहानी इलाज जो दवाओं से न जाता हो अमल के दौरान मरीज़ सूती (या'नी COTTON के) कपड़े पहने रहे (केटी या दूसरे मसूई धागे के बने हुए कपड़े न हों) अब कोई दुरुस्त कुरआन पढ़ने वाला बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ ब आवाज़े बुलन्द 21 बार सू-रतुल क़द्र इस तरह पढ़े कि मरीज़ सुने, मरीज़ पर दम भी करे और पानी की बोतल पर भी दम करे। मरीज़ वक़तन फ़ वक़तन उस में से पानी पीता रहे। येह अमल तीन दिन तक मुसल्लसल कीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** बुख़ार चला जाएगा।

﴿6﴾ नींद न आने के दो रूहानी इलाज

जिस को दर्द वगैरा के सबब नींद न आती हो तो उस के पास **لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ** कसरत से पढ़ने से उस को **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** नींद आ जाएगी नीज़ अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से मरीज़ जल्द सिहहत याब भी हो जाएगा। (मरीज़ को पढ़ने की आवाज़ न जाए इस की एहतियात कीजिये)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (अबिन)

﴿7﴾ अगर नींद न आती हो तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** नींद आ जाएगी ।

जानवरों के काटने और उन से हिफ़ाज़त के 3 रूहानी इलाज

﴿8﴾ जहां ज़हरीले जानवर ने काटा हो उस के गिर्द उंगली घुमाता हुवा एक सांस में सात बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ कर दम करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ज़हर का असर ज़ाइल (या'नी ख़त्म) हो जाएगा ।

﴿9﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 बार लिख (या लिखवा) कर विलादत के बा'द फ़ौरन नहला कर बच्चे को पहना देने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** मूज़ी जानवरों और पेचिश के मरज़ से हिफ़ाज़त होगी ।

﴿10﴾ अगर रास्ते में कुत्ता भोंकने और हम्ला करने लगे तो **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 3 बार पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कुत्ता चुपचाप वापस चला जाएगा ।

जिन्नात के अ-सरात के 3 रूहानी इलाज

﴿11﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** 21 बार जो रात सोते वक़्त पढ़ ले, उस रात वोह हर किस्म के ना-गहानी (या'नी अचानक होने वाले) हादिसात, शरीर इन्सान व जिन्नात के हम्लों और अचानक मौत से महफूज़ रहे । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ**

﴿12﴾ **يَا اللَّهُ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** का आसेब ज़दा ब कसरत विर्द करता रहे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** आसेब जाता रहेगा ।

﴿13﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 41 बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के चमड़े या रेगज़ीन या कपड़े में सी कर बाजू में बांध ले या गले में पहन ले, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** अ-सरात दूर होंगे ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مجمع الزوائد)

﴿14﴾ सोते में कोई चीज़ तंग करती हो या.....

नींद न आती हो, डरावने ख़्वाब आते हों, नींद में जिस्म पर वज़्ज पड़ता हो या ऐसा महसूस होता हो जैसे कोई दबोच रहा है नीज् जिन्न, जादू वगैरा बला व आफ़त से हिफ़ाज़त के लिये सोते वक़्त उम्र भर रोज़ाना बिना नागा येह अमल कीजिये : दोनों हाथों की हथेलियां फैला कर तीनों कुल शरीफ़ (या'नी सू-रतुल इख़्लास, सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास) एक एक बार पढ़ कर उन पर दम कर के सर, चेहरे, सीने और आगे पीछे जहां तक हाथ पहुंचें सारे बदन पर फ़ैरिये । फिर दोबारा, सेहबारा (या'नी तीसरी बार) इसी तरह कीजिये । **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस का फ़ाएदा खुद ही देख लेंगे ।

जादू के 2 रूहानी इलाज

﴿15﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ** 101 बार पढ़ कर सेहूर ज़दा (या'नी जिस पर जादू किया गया हो उस) पर दम कर दिया जाए या येही लिख कर धो कर पिला दिया जाए तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** सेहूर (या'नी जादू) का असर ख़त्म हो जाएगा ।

﴿16﴾ मरीज़ के सर से ले कर पाउं के अंगूठे तक आस्मानी रंग के ग्यारह सूती धागे नाप लीजिये, उन ग्यारह धागों को दो मरतबा तह कर लीजिये, अब धागे के सिरे पर एक ढीली गिरह लगाइये फिर एक बार सू-रतुल फ़लक़ पढ़ कर उस गिरह में फूंक मारिये और फ़ौरन कस दीजिये, इसी तरीके पर ग्यारह गिरहें लगाने के बा'द धागे को दहक्ते कोएलों में डाल दीजिये । (गेस के चूल्हे पर तवा वगैरा रख कर उस पर भी जला सकते हैं) अगर जादू हुवा तो बदबू आएगी, जब तक बदबू आती रहे रोज़ाना एक बार येह अमल करते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** जादू का असर ख़त्म हो जाएगा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

फ़ालिज व लक्वा के 2 रूहानी इलाज

﴿17﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 बार नई रिकाबी पर लिख कर पीने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** शयातीन की

लक्वे से नजात मिलेगी।

﴿18﴾ **بِأَنَّ اللَّهَ** 100 बार सोते वक़्त पढ़ने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** शयातीन की

शरारत नीज़ फ़ालिज और लक्वे की आफ़त से हिफ़ाज़त होगी।

लक्वे का देसी इलाज : मग़ज़े रीठा हस्बे ज़रूरत (देसी दवा की दुकान से) ले कर कूट लीजिये, अब ख़ालिस शहद डाल कर चने के बराबर गोलियां बना लीजिये, एक एक गोली सुब्ह व शाम नीम गर्म दूध पत्ती चाय के साथ इस्ति'माल कीजिये। चन्द दिन या चन्द हफ़ते या चन्द माह के इस्ति'माल से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** शिफ़ा नसीब हो जाएगी।

हेपाटाइटिस का रूहानी इलाज

﴿19﴾ हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ **सूरए कुरैश** 21 बार

(अव्वल आख़िर 11 बार दुरूद शरीफ़) पढ़ (या पढ़वा) कर **आबे ज़मज़म शरीफ़** या उस पानी में जिस के अन्दर आबे ज़मज़म शरीफ़ के चन्द क़तरे शामिल हों दम कीजिये और रोज़ाना सुब्ह, दो पहर और शाम पी लीजिये।

إِنْ شَاءَ اللَّهُ 40 रोज़ के अन्दर अन्दर शिफ़ायाब हो जाएंगे। (सिर्फ़ एक बार दम किया हुवा पानी काफ़ी है हस्बे ज़रूरत मज़ीद पानी मिला लीजिये)

यरक़ान (JAUNDICE) के 4 रूहानी इलाज

﴿20﴾ छोटे बच्चे को **यरक़ान** (पीलिया, **JAUNDICE**) हो गया हो तो हर

बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ **सू-रतुल फ़ातिहा** 21 बार पढ़ कर

1 : दूध पत्ती का मा'ना : ऐसी चाय बनाना जिस में पानी का इस्ति'माल न हुवा हो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (त्र.अमाल)

पियाज़ पर दम कर के उस के गले में पहना दीजिये। **إِنْ شَاءَ اللهُ** शिफ़ा हासिल होगी।

﴿21﴾ सू-रतुल बय्यिनह लिख कर ता'वीज़ बना कर गले में पहना दीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** यरक़ान जाता रहेगा।

﴿22﴾ **سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ** (प. 28, الحشر: 1)

101 बार पढ़ कर पानी पर दम कर के पिलाना यरक़ान के लिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** निहायत मुफ़ीद रहेगा।

﴿23﴾ **يَا حَسِيبُ** 300 बार पढ़ कर पानी पर दम कर के इक्कीस (21) दिन तक पिलाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ** यरक़ान से शिफ़ा हासिल होगी।

दांतों के दर्द के 2 रूहानी इलाज

﴿24﴾ सूरा यासीन की येह आयत : **سَلَّمَ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ** तीन बार पढ़ कर अपनी उंगली पर दम कर के दांतों पर मलिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** दर्द जाता रहेगा।

﴿25﴾ **يَا أَلَلَّهُ** 7 बार काग़ज़ पर लिख (या लिखवा) कर ता'वीज़ की तरह लपेट कर (बेहतर येह है कि प्लास्टिक कोटिंग कर के) दाढ़ के नीचे दबाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ** दाढ़ का दर्द दूर हो जाएगा।

दांत के दर्द का देसी नुस्खा : मसूढ़ों में दर्द या सूजन हो, पीप आता हो तो तक़ीबन 5 ग्राम फट्करी को एक गिलास पानी में गर्म कर लीजिये और जब फट्करी पिघल कर पानी में घुल जाए तो उस को दांतों और मसूढ़ों पर मल लीजिये मसूढ़ों में दर्द या सूजन हो या पीप आती हो, **إِنْ شَاءَ اللهُ** फ़ाएदा हो जाएगा।

فَرْمَانِهِ مُسْتَفَا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مس)

﴿26﴾ दांत के दर्द का इक्सीर अमल

अगर दांत में सख्त दर्द हो तो बा वुजू सूराए कुरैश 21 बार पढ़ कर नमक पर दम कीजिये और वोह नमक दर्द वाले दांत पर मलिये और दांतों के दरमियान रखिये दिन में दो तीन बार येह अमल करने से **اِنْ شَاءَ اللهُ** फ़ाएदा हो जाएगा।

﴿27﴾ पित्ते और मसाने की पथरी का रूहानी इलाज

لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ 46 बार सादा कागज़ पर लिख कर पानी में धो कर पीने से पित्ते और मसाने की पथरी **اِنْ شَاءَ اللهُ** रेज़ा रेज़ा हो कर निकल जाएगी। (मुह्वते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

कच्चे पपीते के ज़रीए गुर्दे और पित्ते की पथरी का इलाज

कच्चे पपीते पर सफ़ेद या काला नमक लगा लीजिये और थोड़ी सी पिसी हुई काली मिर्च छिड़क लीजिये और दिन में तीन मर्तबा (तक़रीबन दस दस ग्राम) ख़ूब अच्छी तरह चबा कर खाइये, चबाना दुश्वार हो तो पीस कर भी इस्ति'माल कर सकते हैं। **اِنْ شَاءَ اللهُ** गुर्दे (और पित्ते) की पथरी निकल जाएगी। ज़ियादा मिक्दार में न खाइये क्यूं कि येह सकील (या'नी वज़्नी) होने के सबब देर से हज़्म होता है (अगरचे दूसरी चीज़ों को जल्द हज़्म करने में मदद देता है)।

गुर्दे और पेशाब की बीमारियों के 3 रूहानी इलाज

﴿28﴾ **وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكَ وَابْلَعِي مَاءَكَ وَابْلَعِي مَاءَكَ وَابْلَعِي مَاءَكَ وَابْلَعِي مَاءَكَ وَابْلَعِي مَاءَكَ**

الْأَمْرَ وَاسْتَوْتِ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ﴿٢٢﴾ (هُود: ٤٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (अिन)

थोड़ा थोड़ा पेशाब बार बार आता हो तो इस के लिये इन आयाते मुबा-रका को लिख (या लिखवा) कर बाजू में बांध या गले में पहन लिया जाए तो **إِنْ شَاءَ اللهُ** शिफ़ा हासिल होगी ।

﴿29﴾ एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ **सूरए अलम नशरह** 7 बार फिर आख़िर में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ** **गुर्दे का दर्द** ख़त्म हो जाएगा ।

﴿30﴾ गुर्दे की बीमारी के सबब पेशाब थोड़ा थोड़ा आता हो या पेशाब में जलन और चुभन होती हो और कोई दवा कारगर न होती हो तो बारिश के पानी पर बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ **सूरए अलम नशरह** ग्यारह बार पढ़ कर दम कर दीजिये और दिन में चार बार (सुब्ह नाश्ते से क़ब्ल, जोहर के वक़्त, अ़स् के बा'द और सोते वक़्त) तीन तीन घूंट वोह पानी पियें । हर बार पीने से पहले सात बार दुरूदे इब्राहीम पढ़ लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللهُ** गुर्दे की बीमारी और पेशाब की जलन वगैरा दूर हो जाएगी ।

गुर्दे की बीमारियों के लिये तिब्बी नुस्खा

रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह तीन ग्राम मीठा सोडा पानी से इस्ति'माल कीजिये (तबीब की इजाज़त से), प्यास हो या न हो ज़ियादा से ज़ियादा पानी इस्ति'माल कीजिये । ग्यारह दिन में **إِنْ شَاءَ اللهُ** आराम आ जाएगा । अगर मरज़ पुराना है तो 41 दिन तक येह इलाज कीजिये ।

पेशाब में ख़ून आने का रूहानी इलाज

﴿31﴾ **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** **هُوَ اللهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ**

फरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُعْتَبَرَات)

الْحُسْنَى يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٣﴾ (پ ۲۸، الحشر: ۲۴)

कभी मसाने या गुर्दे में पथरी के सबब या गर्म तासीर वाली चीजों के कस्स्ते इस्ति'माल से पेशाब में खून आने लगता है । नीज़ लाल मिर्च का ज़ियादा इस्ति'माल पेशाब में जलन पैदा करता है । मरीज़ को चाहिये कि गर्म तासीर वाली चीजों और लाल मिर्चों से परहेज़ करे । हर दो घन्टे बा'द अब्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ के साथ ऊपर दी हुई आयते मुबा-रका तीन बार पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लीजिये । (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

नाफ़ का रूहानी इलाज

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ طَسْلَمٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِیْمٍ ﴿۵۱﴾ (پ ۲۳، یس: ۵۸) ﴿32﴾

कागज़ पर बा वुजू लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोर्टिंग कर के कपड़े वगैरा में सी कर नाफ़ पर इस तरह बांधिये कि नाफ़ के नीचे न जाए, إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा हासिल होगी ।

एहतिलाम के दो रूहानी इलाज

﴿33﴾ सूरए नूह सोते वक़्त एक बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कीजिये । إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ एहतिलाम नहीं होगा ।

﴿34﴾ सोते वक़्त दिल की जगह शहादत की उंगली से “या उमर” लिखने की आदत बनाइये إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ शैतान के दख़ल से महफूज़ रहते हुए एहतिलाम से बचेंगे ।

आंखों के अमराज़ के 3 रूहानी इलाज

﴿35﴾ **يَا شَكُورُ** अगर आंखों में रोशनी कम हो गई हो तो 41 बार पढ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

कर पानी पर दम कर के आंखों पर येह पानी मलिये। (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿36﴾ नज़र कमज़ोर हो जाए या चली जाए तो “يَا رَحْمَنُ يَا رَحِيمُ يَا اللهُ يَا سَلَامُ” 41 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दोनों हाथों में पानी ले कर दम करे और मुंह पर डाले और आंखों पर मले **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** फ़ाएदा होगा। (मुद्दते इलाज : मुसल्लसल 7 दिन) **म-दनी फूल** : मुंह पर डालते वक़्त कोई पाक कपड़ा वगैरा बिछा लीजिये ताकि दम किये हुए पानी की बे अ-दबी न हो।

﴿37﴾ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ हर नमाज़ के बा'द तीन बार पढ़ कर उंगली पर दम कर के अपनी आंखों पर लगाइये। येह अमल उम्र भर जारी रखिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** बीनाई की कमज़ोरी दूर होगी नीज़ सफ़ेद और काले मोतिये से भी हिफ़ाज़त होगी।

कान के दर्द का रूहानी इलाज

﴿38﴾ **يَا سَمِيعُ** 21 बार (अव्वल आख़िर तीन मर्तबा दुरूद शरीफ़) पढ़ कर मरीज़ के दोनों कानों में फूंक मार दीजिये। **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** कान के दर्द से छुटकारा मिलेगा। (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

नज़ला ज़ुकाम का रूहानी इलाज

﴿39﴾ हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सू-रतुल फ़ातिहा तीन बार (अव्वल आख़िर तीन मर्तबा दुरूद शरीफ़) पढ़ कर तीन रोज़ तक रोज़ाना मरीज़ पर दम कीजिये। **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** नज़ला ज़ुकाम से नजात हासिल होगी।

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुरआन)

﴿40﴾ दिल की धड़कन बढ़ जाने का रूहानी इलाज

101 سَلَّمَ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَاحِيمٍ (58) : सूरा यासीन की येह आयत :

बार, अब्बल आखिर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ (या पढ़वा) कर किसी खाने या पीने की चीज़ पर दम कर के खा या पी लीजिये, शिफ़ा मिलेगी। (मुद्दते इलाज : ता हूसूले शिफ़ा)

﴿41﴾ दिल के सूराख़ का रूहानी इलाज

75 बार पढ़ कर दिल में सूराख़ वाले बच्चे नीज़ घबराहट, दिल और सीने के तमाम मरीज़ों के सीने पर दम करना बि फ़ज़िलही तअ़ाला मुफ़ीद है।

न-ज़रे बदन के 3 रूहानी इलाज

﴿42﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ 60 बार पढ़ कर दम कीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ न-ज़रे बदन का असर जाता रहेगा।

﴿43﴾ हर चीज़ खाने पीने से क़ब्ल بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ लेने का आदी إِنْ شَاءَ اللَّهُ न-ज़रे बदन से महफूज़ रहेगा।

नज़र और दर्द का रूहानी इलाज

﴿44﴾ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ 786 बार कागज़ पर लिख (या लिखवा) कर ता'वीज़ की तरह लपेट कर प्लास्टिक कोटिंग कर के रेग़ीन या कपड़े वगैरा में सी कर बाज़ू में बांध या गले में पहन लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ न-ज़रे बदन का असर ख़त्म हो जाएगा। जिस के हाथ पाउं में दर्द हो उस के लिये भी येह ता'वीज़ إِنْ شَاءَ اللَّهُ मुफ़ीद है।

فَرْمَانِهٖ مُسْتَفَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है। (ابویعلیٰ)

नज़र और हर किस्म के शर से बच्चों की हिफ़ाज़त के लिये

﴿45﴾ बा वुजू हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ तीन तीन बार सू-रतुल फ़ातिहा, सू-रतुल इख़्लास, सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर बच्चों पर दम कीजिये। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ ﷻ बच्चे नज़र लगाने वगैरा से महफूज़ रहेंगे। (येह अमल रोज़ाना सुब्ह व शाम या'नी दिन में दो बार करना है)

मिर्गी के 3 रूहानी इलाज

﴿46﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 66 बार रोज़ाना पढ़ कर मिर्गी के मरीज़ पर दम कीजिये اِنْ شَاءَ اللّٰهُ ﷻ फ़ाएदा होगा। इलावा अर्ज़ी बुख़ार, नज़ला, जुकाम, खांसी हर किस्म के दर्द और आंखों की बीमारियों के लिये भी येह रूहानी इलाज मुफ़ीद है। (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿47﴾ يَا اللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ 40 बार एक सांस में पढ़ कर जिसे मिर्गी का दौरा पड़ा हो उस के कान में दम कीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ ﷻ फ़ौरन होश में आ जाएगा।

﴿48﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ सू-रतुशम्मस पढ़ कर मिर्गी वाले के कान में फूंक मारना बहुत मुफ़ीद है।

सर के बाल झड़ने का रूहानी इलाज

﴿49﴾ बा वुजू हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ सू-रतुल्लैल 41 बार पढ़ कर सरसों या नारियल के तेल की बोतल पर दम कर लीजिये, रोज़ाना सोते वक़्त सर पर इस तेल की मालिश कीजिये। कुछ दिन मालिश करने से اِنْ شَاءَ اللّٰهُ ﷻ सर के बाल झड़ना बन्द हो जाएंगे। दाढ़ी

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

के बाल झड़ते हों तो उस के लिये भी यह अमल मुफ़ीद है। (जरूरतन उसी बोतल में दूसरा तेल शामिल कर लीजिये)

गन्ज दूर करने का अमल

जैतून के तेल में शहद एक चम्मच और पिसी हुई दारचीनी आधा चम्मच मिला कर गन्ज पर लगाइये। कुछ अर्सा मुसल्लसल इस्ति'माल करने से إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ नए बाल निकलना शुरू हो जाएंगे।

सूजन का रूहानी इलाज

﴿50﴾ अगर बदन पर कहीं वरम या'नी सूजन हो गई हो तो لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ 67 बार लिख (या लिखवा) कर अपने पास रखिये या ता'वीज बना कर पहन लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ वरम दूर हो जाएगा।

मूजी अमराज से हिफ़ाजत का रूहानी नुस्खा

﴿51﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ 76 बार कागज़ वगैरा पर लिख (या लिखवा) कर आबे ज़मज़म शरीफ़ से धो कर पीने वाला إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मूजी अमराज से महफूज़ रहेगा।

कमर के दर्द का रूहानी इलाज

﴿52﴾ फ़ज़्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ के दरमियान हर बार بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ के साथ 41 बार सू-रतुल फ़ातिहा पढ़िये (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा) एक साहिब का कहना है : “ أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने यह रूहानी इलाज किया तो मेरी कमर का दर्द चला गया।”

आधे और पूरे सर के दर्द के 5 रूहानी इलाज

﴿53﴾ إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ पढ़ कर सर पर दम कीजिये بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **اَللّٰهُ** (طبرانی) उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है।

दर्द जाता रहेगा येही कागज़ पर लिख कर ता'वीज़ बना कर सर में बांध लेने से भी **اِنْ شَاءَ اللهُ** फ़ाएदा हो जाएगा।

﴿54﴾ **يَا سَلَامُ** 11 बार पढ़ कर दम कीजिये, 3 या 7 या 11 बार इसी तरह पढ़ कर दम कीजिये, **اِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** 11 बार की ता'दाद पूरी होने से कब्ल ही आधे सर का दर्द काफ़ूर (या'नी दूर) हो जाएगा, येह अमल पूरे सर के दर्द के लिये भी **اِنْ شَاءَ اللهُ** मुफ़ीद है।

﴿55﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ** 65 बार बा'द नमाज़े अस्स पढ़ कर सर पर दम करने से आधे और पूरे सर का दर्द अल्लाह पाक के करम से ख़त्म हो जाएगा।

﴿56﴾ ज़बान पर एक चुटकी नमक रख कर 12 मिनट के बा'द एक गिलास पानी पी लीजिये सर में कैसा ही दर्द हो **اِنْ شَاءَ اللهُ** फ़ाएदा हो जाएगा। (हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ येह इलाज न करें कि उन के लिये नमक का इस्ति'माल नुक़सान देह होता है)

﴿57﴾ **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِسْمِ اللهِ رَبِّ الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ بِسْمِ اللهِ الَّذِي بِيَدِهِ شَفَاءُ بِسْمِ اللهِ الَّذِي لَا يَضُرُّمَعَ اسْمُهُ شَيْءٌ** मरीज़ के सर पर हाथ रख कर तीन बार या सात बार येह दुआ पढ़ कर सर पर दम कीजिये। **اِنْ شَاءَ اللهُ** शिफ़ा हासिल होगी।

दर्दे सर, चक्कर आने और दिमागी कमज़ोरी का रूहानी इलाज

﴿58﴾ **أَسْكُنْ سَكْنَتَكَ بِالَّذِي لَهُ مَا فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ** जिस के सर में दर्द हो या चक्कर आते हों उस के सर पर दर्द की जगह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (अल्हिज़्बा)

हाथ रख कर येह कलिमात सात बार पढ़ कर सर पर फूंक मार दीजिये। इस्लामी बहन खुद अपने सर के दर्द की जगह पकड़ ले और उस का महरम या शोहर पढ़ कर उस के सर पर फूंक मार दे, मरीज़ से पूछ लीजिये, अगर अभी दर्द बाकी हो तो दोबारा येही अमल कीजिये, चन्द मर्तबा करने से **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** सर का दर्द ख़त्म हो जाएगा और दिमागी कमजोरी दूर होगी मगर दिमागी कमजोरी के लिये येह ज़रूरी है कि येह अमल रोज़ाना किसी एक ही वक़्त में (म-सलन रोज़ाना दिन के 12 बजे) सात दिन तक मुसल्सल किया जाए।

दीनी इम्तिहान में काम्याबी के लिये

﴿59﴾ दीनी मद्रसे का तालिबे इल्म, इम्तिहान में काम्याबी के लिये पांचों नमाज़ों के बा'द बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सू-रतुल इख़्लास 16 मर्तबा पढ़े और फिर अल्लाह तआला से इम्तिहान में काम्याबी की दुआ मांगे, **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** उसे काम्याबी हासिल होगी। येह अमल अपने वतन में या बैरूने मुल्क जाइज़ मुला-ज़मत के हुसूल की खातिर इन्टरव्यू में काम्याबी के लिये भी **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** कारआमद है।

आफ़तों, बीमारियों, बे रोज़गारियों के दो रूहानी इलाज

﴿60﴾ **يَا سَلَامُ** : उठते बैठते, चलते, फिरते, बा वुजू पढ़ते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** अमराज़ व आफ़त से नजात मिलेगी और रोज़ी में ब-र-कत होगी।

﴿61﴾ दाइमी मरीज़ हर वक़्त **يَا مُعِيدُ** पढ़ता रहे, अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त सिह्हत इनायत फ़रमाएगा।

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढे । (माम)

खावन्द को नेक नमाज़ी बनाने के लिये

﴿62﴾ खावन्द बुरी आदत का शिकार हो और घर में हर वक़्त झगड़ा रहता हो तो बीवी हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ ग्यारह मर्तबा सू-रतुल फ़ातिहा पढ़ कर पानी पर दम करे फिर अपने खावन्द को पिलाए, **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** शोहर नेकी के रास्ते पर गामज़न हो जाएगा । (शोहर बल्कि किसी को भी इस अमल का पता न चले वरना ग़लत फ़हमी के सबब परेशानी हो सकती है) जब जब मौक़अ मिले येह अमल कर लिया जाए, दम किया हुवा पानी कूलर में मौजूद पानी में भी डाला जा सकता है, बेशक खावन्द के इलावा और अफ़रादे ख़ाना भी उस में से पियें, ज़रूरतन दूसरा पानी कूलर में डालते रहें ।

केन्सर के 4 रूहानी इलाज

﴿63﴾ अव्वल आख़िर ग्यारह बार दुरूदे इब्राहीम और दरमियान में “सूरए मरयम” पढ़ कर पानी पर दम कीजिये, ज़रूरतन दूसरा पानी मिलाते रहिये, मरीज़ वोही पानी सारा दिन पिये, येह अमल चालीस दिन तक बिला नागा करते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** शिफ़ा हासिल होगी । (दूसरा भी पढ़ कर दम कर के मरीज़ को पिला सकता है)

﴿64﴾ येह आयते करीमा : (پ ۲۹، المائدة : ۱۴) **الْاٰیٰتِ لَمْ يَنْ خَلَقْ ط وَهُوَ اللّٰطِیْفُ الْخَبِیْرُ ۝** 2022 बार (अव्वल आख़िर 11 बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर केन्सर के मरीज़ पर दम कीजिये पानी और दवा पर दम कर के भी पिलाइये, **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** बहुत फ़ाएदा होगा । (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿65﴾ सात दिन तक रोज़ाना बा वुजू **یٰۤاَرَقِیْبُ** 100 बार (अव्वल आख़िर

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (ज़ुलम)

11 बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर **केन्सर** के मरीज़ पर दम कीजिये, अगर ज़ख़्म हो तो उस पर भी दम कीजिये अगर **केन्सर** का ज़ख़्म जिस्म के अन्दरूनी हिस्से या पर्दे की जगह हो तो ज़ख़्म की जगह पर कपड़े के ऊपर दम कर दीजिये। अगर जिस्म के बाहर ज़ख़्म है तो सरसों के तेल पर भी दम कर दीजिये और वोह तेल मरीज़ ज़ख़्म पर लगाता रहे, **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़ख़्म सहीह हो जाएगा और **केन्सर** दूर होगा।

﴿66﴾ **केन्सर** ख़्वाह किसी किस्म का हो, एक किलो जैतून के तेल में 100 ग्राम हल्दी अच्छी तरह पका कर छान कर रख लीजिये, मरीज़ हर गिज़ा के बा'द बीस बीस क़तरे पी कर ऊपर नीम गर्म पानी पी लिया करे। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा होगा।

रोज़ाना पिस्ते खाइये और ख़ुद को केन्सर से बचाइये

एक जदीद तहक़ीक़ के मुताबिक़ रोज़ाना मुनासिब मिक्दार में पिस्ते खाने से फेफ़ड़ों और दीगर कई किस्म के **केन्सर्ज** का ख़तरा कम हो जाता है। केन्सर पर काम करने वाली एक “अमरीकी एसोसीएशन” के तहत की जाने वाली तहक़ीक़ के मुताबिक़ पिस्ते में विटामिन E की एक ख़ास किस्म होती है जिस के ज़रीए फेफ़ड़ों समेत कई अक्साम के केन्सर्ज के ख़िलाफ़ मज़बूत मुदा-फ़-अती निज़ाम (Strong Immune System) हासिल किया जा सकता है।

कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये चार अवराद

﴿67﴾ **يَا قَوِيُّ** 11 बार, पांचों नमाज़ों के बा'द सर पर दाहना (या'नी सीधा) हाथ रख कर पढ़िये। (जन्नती ज़ेवर, स. 605)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **اَللّٰهُمَّ** तुम पर रहमत भेजेगा । (अबुनूर)

﴿68﴾ रात को सोते वक़्त “**يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ**” तीन मर्तबा पढ़ कर 3 बादामों पर दम कीजिये, एक बादाम उसी वक़्त, एक सुब्ह नहार मुंह और एक दो पहर के वक़्त खाइये । वालिदैन भी यह अमल कर के बच्चों को खिला सकते हैं । (मुद्दत : 21 दिन)

﴿69﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 564 बार पढ़ कर **अल्लाह तआला** के हुज़ूर हिफ़ज़ में आसानी की दुआ कीजिये, कोशिश जारी रखने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कुरआने करीम हिफ़ज़ हो जाएगा ।

﴿70﴾ **يَا حَىُّ يَا قَيُّوْمُ** एक बार काग़ज़ पर लिख कर ता'वीज़ बना कर बाजू में बांध या गले में डाल लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** निस्सयान (या'नी भूलने) की बीमारी से छुटकारा हासिल होगा ।

﴿71﴾ **يَا عَلِيْمُ** 7 बार और हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सूरा अलम नशरह 21 मर्तबा पढ़ कर पानी पर दम कर के जिस बच्चे या बड़े का हाफ़िज़ा कमज़ोर हो उस को पिलाइये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाएगा ।

शोहर और बीवी में महब्बत

﴿72﴾ अगर शोहर से बीवी कम महब्बत करती हो तो शोहर रोज़ाना बा'द नमाज़े अस्स बा वुजू मुंह में मिस्री की डली रख कर **يَا وَدُودُ** 101 बार (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर अपनी बीवी का तसव्वुर बांध कर उस के सीने पर दम कर दे । अगर शोहर महब्बत कम करता हो तो बीवी येही अमल करे । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** मियां बीवी एक दूसरे से

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है । (बाय़ुम्न)

महब्वत करने लगेंगे । (येह अ़मल सिर्फ़ मियां बीवी की महब्वत के लिये है और चुपके से करना है न मियां बीवी एक दूसरे को बताएं न किसी और को पता चले कि ग़लत फ़हमी के सबब नुक़सान हो सकता है)

बच्चे की ज़ेहनी कमज़ोरी का रूहानी इलाज

﴿73﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ 786 बार (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ (या पढ़वा) कर एक बोतल पानी पर दम कर के रख लीजिये और वोह पानी रोज़ाना सुबह नहार मुंह और सोते वक़्त बच्चे को पिलाते रहिये, ज़रूरतन दूसरा पानी मिलाते रहिये । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ । ज़ेहन रोशन हो जाएगा । (मुद्दत : ता हुसूले मुराद)

एपेन्डिक्स का रूहानी इलाज

﴿74﴾ आ-यतुल कुर्सी 11 बार और يَاعْظِیْمُ 7 बार (अव्वल आख़िर तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर एक चुटकी नमक पर दम कर के उस को पानी में डाल कर पी लीजिये । येह अ़मल दिन में तीन बार कीजिये । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ । एपेन्डिक्स ख़त्म हो जाएगा ।

मिर्गी के दौरै का रूहानी इलाज

﴿75﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ النَّصِّ طَسَمَ كَهَيْعَصِّ یَسِّ - وَالْقُرْآنِ الْحَكِیْمِ حَمَّ عَسَقَ نَ وَالْقَلَمِ وَمَا یَسْطُرُونَ - बा वुजू तीन बार पढ़ कर मरीज़ पर दम कीजिये । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ । मिर्गी का दौरा ख़त्म हो जाएगा ।

नज़र के रूहानी इलाज

﴿76﴾ एक मर्तबा सू-रतुल कौसर पढ़ कर बच्चे के सीधे गाल पर दम

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ पढ़ता है **اَللّٰهُمَّ** उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उहद पहाड जितना है। (عیارالرائ)

कीजिये। दूसरी मर्तबा सू-रतुल कौसर पढ़ कर उलटे गाल की तरफ और तीसरी मर्तबा पढ़ कर उस की पेशानी पर दम कर दीजिये **اِنْ شَاءَ اللهُ** नज़र उतर जाएगी। (शुरूअ में तीन बार दुरूद शरीफ एक बार अऊजू और हर बार सू-रतुल कौसर से क़ब्ल पूरी **بِسْمِ اللهِ** पढ़नी है)

﴿77﴾ तीन मर्तबा **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ कर सात मर्तबा येह दुआ : **بِسْمِ اللهِ، اللهُمَّ اَذْهَبْ حَزْهَآ وَبَرِّدْهَا وَوَصِّبْهَا** : पढ़ कर जिस को नज़र हो उस पर दम कीजिये, **اِنْ شَاءَ اللهُ** नज़र उतर जाएगी।

﴿78﴾ सात बार, एक मर्तबा **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** आ-यतुल कुर्सी, तीन मर्तबा सू-रतुल फ़लक़, तीन मर्तबा सू-रतुन्नास (फ़लक़ और नास के क़ब्ल हर बार पूरी **بِسْمِ اللهِ** पढ़नी है) अक्वल आख़िर एक बार दुरूदे पाक पढ़ कर तीन अ़दद सुख़ मिर्ची पर दम कीजिये। फिर इन मिर्ची को मरीज़ के सर के गिर्द 21 बार घुमा कर चूल्हे में डाल दीजिये। **اِنْ شَاءَ اللهُ** नज़र का असर दूर हो जाएगा।

ब्लड प्रेशर के दो देसी इलाज

﴿1﴾ चार अ़दद कढ़ी पत्ते एक कप पानी में रात भर पड़े रहने दीजिये, सुब्ह नहार मुंह उन चार में से दो पत्ते चबा कर खा लीजिये और ऊपर से वोही पानी पी लीजिये। (बक़िय्या दो कढ़ी पत्ते सालन वग़ैरा में इस्ति'माल कर लीजिये) **اِنْ شَاءَ اللهُ** सिर्फ़ एक हफ़्ते में ब्लड प्रेशर नॉर्मल हो जाएगा बल्कि एक ही दिन में फ़र्क़ महसूस होगा। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** इस इलाज से ब्लड प्रेशर के मरीज़ के चेहरे पर भी रौनक़ आ जाती है।

﴿2﴾ हस्बे ज़रूरत करेले काट कर बीज समेत खुश्क कर लीजिये, फिर

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे। (طبرانی)

पीस कर पावडर बना लीजिये। सुब्ह व शाम आधी आधी चमची खाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** शूगर, ब्लड प्रेशर और कोलेस्ट्रॉल नॉर्मल हो जाएगा।
(मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफा)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़ीबात, इज्तिमाआत, आ'रस और जुलूसे मीलाद वगैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुशतमिल पेम्फ्लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घरों में हस्बे तौफ़ीक़ रिसाले या म-दनी फूलों के पेम्फ्लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

ग़मे मदीना, बक़ीअ, मग़िफ़रत और बे हि़साब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा के पड़ोस त़ालिब



21 र-जबुल मुरज्जब 1436 सि.हि.

11-05-2015

مآخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالکتب العلمیہ بیروت	الترغیب والترہیب		قرآن مجید
دارالکتب العلمیہ بیروت	النجاة	دارالکتب العلمیہ بیروت	بخاری
دارصادر بیروت	احیاء العلوم	دارابن حزم بیروت	مسلم
دارالکتب العلمیہ بیروت	عیون الحکایات	داراحیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
دارالتوفیق دمشق	منہاج القاصدین	دارالفکر بیروت	ترمذی
دارالمعرفت بیروت	ردالمحرر	دارالمعرفت بیروت	ابن ماجہ
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	ملفوظات اعلیٰ حضرت	دارالمعرفت بیروت	موطامام مالک
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
نشیاء القرآن ہبلی کشر مرکز الاولیاء لاہور	مراۃ السانجیح	دارالکتب العلمیہ بیروت	عجم اوسط
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	چشتی زیور	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ	مسند ابو ار
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	152 رحمت بھری حکایات	دارالکتب العلمیہ بیروت	شعب الایمان
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش (حرم)	دارالمعرفت بیروت	المستدرک
☆☆☆☆	☆☆☆☆☆	دارالکتب العلمیہ بیروت	الفرودس بمآثور الخطاب

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (स्)।

फेहरिस

उन्वान	पृष्ठ	उन्वान	पृष्ठ
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	पेट की बीमारी में मरने की फ़ज़ीलत	14
बीमार आबिद	1	बीमारियों में मरने वाले शहीदों की निशान देही	15
बीमारी बहुत बड़ी ने'मत है	2	बा'ज अमराज़ में मरने वाला शहीद है	15
बीमारी में मोमिन और मुनाफ़िक़ का फ़र्क़	3	मरीज़ की इयादत का सवाब	15
ज़ख़्मी होते ही हंस पड़ीं (हिक़ायत)	4	बीमार को दुआ के लिये कहो	16
मुसीबत छुपाने की फ़ज़ीलत	4	इयादत करते वक़्त की एक सुन्नत	16
दाढ़ में दर्द के सबब मैं सो न सका! (हिक़ायत)	5	इयादत में सात बार पढ़ने की दुआ	16
बीमार के लिये तोहफ़ा	5	इयादत के 7 म-दनी फूल	17
बीमारी के फ़ज़ाइल पर 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा	6	बीमारी और झूट	17
बिगैर बीमार हुए वफ़ात	7	मा'मूली बीमारी को सख़्त बीमारी कहने के	
एक रात के बुख़ार का सवाब	7	मु-तअल्लिक़ झूट की 6 मिसालें	18
बुख़ार महशर की आग से बचाएगा	7	दुखों के बा वुजूद नेकियों भरे जवाबत की मिसालें	19
बुख़ार को बुरा न कहो	8	मिज़ाज पुरसी के जवाब में झूट बोलने की 9 मिसालें	20
सरकार को दो मर्दों के बराबर बुख़ार आता था	8	اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ कहने की एक निय्यत	21
हम ने कभी किसी का बुरा नहीं चाहा!	9	मरीज़ को तसल्ली देने के लिये बोले जाने	
मरीज़ और कलिमए कुफ़्र	9	वाले झूट की 13 मिसालें	21
सवाब के शौक में मांग कर बुख़ार लिया (हिक़ायत)	10	मरीज़ के झूट बोलने की 13 मिसालें	23
राहे खुदा में सर दर्द पर सब्र की फ़ज़ीलत	11	बीमारियों के 78 रूहानी इलाज	24
त-ल-बए इल्मे दीन और म-दनी काफ़िलों		बुख़ार के चार रूहानी इलाज	24
के मुसाफ़िरीन के लिये खुश ख़बरी	11	ऐसे बुख़ार का रूहानी इलाज जो	
सर दर्द के शुक्राने में 400 रकअत नफ़्त (हिक़ायत)	11	दवाओं से न जाता हो	25
बुख़ार और दर्द सर मुबारक अमराज़ हैं	12	नींद न आने के दो रूहानी इलाज	25
जन्नती ख़ातून (हिक़ायत)	12	जानवरों के काटने और उन से हिफ़ाज़त	
दवा भी सुन्नत है और दुआ भी	13	के 3 रूहानी इलाज	26
मिर्गी का रूहानी इलाज	14	जिन्नात के अ-सरात के 3 रूहानी इलाज	26
नस चढ़ जाने की फ़ज़ीलत	14	सोते में कोई चीज़ तंग करती हो या.....	27

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया। (طرائف)

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
जादू के 2 रूहानी इलाज	27	मिर्गी के 3 रूहानी इलाज	35
फ़ालिज व लक्वा के 2 रूहानी इलाज	28	सर के बाल झड़ने का रूहानी इलाज	35
हेपाटाइटिस का रूहानी इलाज	28	गन्ज दूर करने का अमल	36
यरक़ान (JAUNDICE) के 4 रूहानी इलाज	28	सूजन का रूहानी इलाज	36
दांतों के दर्द के 2 रूहानी इलाज	29	मूज़ी अमराज़ से हिफ़ाज़त का रूहानी नुस्खा	36
दांत के दर्द का इक्सीर अमल	30	कमर के दर्द का रूहानी इलाज	36
पित्ते और मसाने की पथरी का रूहानी इलाज	30	आधे और पूरे सर के दर्द के 5 रूहानी इलाज	36
कच्चे पपीते के ज़रीए गुर्दे और पित्ते की पथरी का इलाज	30	दर्दे सर, चक्कर आने और दिमागी कमज़ोरी का रूहानी इलाज	37
गुर्दे और पेशाब की बीमारियों के 3 रूहानी इलाज	30	दीनी इम्तिहान में काम्याबी के लिये	38
गुर्दे की बीमारियों के लिये तिब्बी नुस्खा	31	आफ़तों, बीमारियों, बे रोज़गारियों के दो रूहानी इलाज	38
पेशाब में खून आने का रूहानी इलाज	31		
नाफ़ का रूहानी इलाज	32	खावन्द को नेक नमाज़ी बनाने के लिये	39
एहतिलाम के दो रूहानी इलाज	32	केन्सर के 4 रूहानी इलाज	39
आंखों के अमराज़ के 3 रूहानी इलाज	32	रोज़ाना पिस्ते खाइये और खुद को केन्सर से बचाइये	40
कान के दर्द का रूहानी इलाज	33		
नज़्ला जुकाम का रूहानी इलाज	33	कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये चार अवरद	40
दिल की धड़कन बढ़ जाने का रूहानी इलाज	34	शोहर और बीबी में महब्वत	41
दिल के सूराख़ का रूहानी इलाज	34	बच्चे की ज़ेहनी कमज़ोरी का रूहानी इलाज	42
न-ज़रे बद के 3 रूहानी इलाज	34	एपेन्डिक्स का रूहानी इलाज	42
नज़र और दर्द का रूहानी इलाज	34	मिर्गी के दौरों का रूहानी इलाज	42
नज़र और हर किस्म के शर से बच्चों की हिफ़ाज़त के लिये	35	नज़र के रूहानी इलाज	42
		ब्लड प्रेशर के दो देसी इलाज	43

येह रिसाला पढ़ लेने के बाद सवाब की निश्चयत से किसी को दे दीजिये

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ آمَنَّا بَعْدَ مَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

कुरआन भुला देने का अज़ाब

यकीनन हिफ़जे कुरआने करीम कारे सवाबे अज़ीम है मगर याद रहे ! हिफ़ज़ करना आसान मगर उम्र भर इस को याद रखना दुश्वार है । हुफ़फ़ाज़ व हाफ़िज़ात को चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम एक पारह लाज़िमन तिलावत कर लिया करें । जो हुफ़फ़ाज़ र-मज़ानुल मुबारक की आमद से थोड़ा अर्सा क़ब्ल फ़क़त मुसल्ला सुनाने के लिये मन्ज़िल पक्की करते हैं और इस के इलावा **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** सारा साल ग़फ़लत के सबब कई आयात भुलाए रहते हैं, वोह बार बार पढ़ें और ख़ौफ़े खुदा से लरजें । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : “जो शख्स कुरआन पढ़े फिर उसे भुला दे तो क़ियामत के दिन अल्लाह तअ़ला से कोढ़ी हो कर मिले ।” (अबुदाउद हदिथ 1474) **सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह** हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **फ़रमाते हैं** : कुरआन पढ़ कर भुला देना गुनाह है । जो कुरआनी आयात याद करने के बा'द भुला देगा बरोजे क़ियामत **अन्धा** उठाय़ा जाएगा । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 553) **आ'ला हज़रत** इमाम अहमद रज़ा ख़ान **फ़रमाते हैं** : उस से ज़ियादा नादान कौन है जिसे खुदा ऐसी हिम्मत बख़्शे और वोह उसे अपने हाथ से खो दे अगर क़द्र इस (हिफ़जे कुरआने पाक) की जानता और जो सवाब और द-रजात इस पर मौज़ुद हैं (या'नी जिन का वा'दा किया गया है) उन से वाक़िफ़ होता तो इसे जानो दिल से ज़ियादा अज़ीज़ (प्यारा) रखता । मज़ीद **फ़रमाते हैं** : जहां तक हो सके इस के पढ़ाने और हिफ़ज़ कराने और खुद याद रखने में कोशिश करे ताकि वोह सवाब जो इस पर मौज़ुद (या'नी वा'दा किये गए) हैं हासिल हों और बरोजे क़ियामत **अन्धा कोढ़ी** उठने से नजात पाए ।

(फ़तावा र-जविय्या, जि. 23, स. 645, 647)



बुजुर्गों के तज्किरे का अदब

इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ لَا تُحْرَم बीमारी की वजह से टेक लगाए हुए थे, आप की खिदमत में हज़रते इब्राहीम बिन तह्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ का जिक्रे ख़ैर हुवा, तो फ़ौरन सीधे बैठ गए और फ़रमाने लगे सालिहीन के तज्किरे के वक़्त टेक लगा कर बैठना मुनासिब नहीं।

(تاریخ بغداد للخطیب البغدادی ج ۱ ص ۱۰۸)

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाह् दे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुदोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुदोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860



मक-त-बतुल-मसीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net